

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-77

दिनांक: मंगलवार, 06 अक्टूबर, 2026



विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 33.7 एवं 22.5 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 89 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 68 प्रतिशत, हवा की औसत गति 5.1 कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 3.5 मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 6.4 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से०मी० गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 28.3 एवं दोपहर में 35.8 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि मौसम शुष्क रहा है।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(07-11 अक्टूबर, 2026)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा० आर० पी० सी० ए० यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 07 से 11 अक्टूबर, 2026 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान अवधि के दौरान 7-9 अक्टूबर के आसपास उत्तर बिहार के आसमान में गरज वाले बादलों के बनने के साथ अधिकांश जिलों के कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा होने का अनुमान है।
- इस दौरान अधिकतम तापमान 31-35°C तथा न्यूनतम तापमान 22-26°C के बीच रहने की संभावना है।
- सुबह के समय सापेक्ष आर्द्रता 75-85% तथा दोपहर में 45-55% के आसपास रह सकती है।
- पूर्वानुमान अवधि के दौरान हवा मुख्यतः पूर्वी दिशा से 5-15 किमी प्रति घंटा की गति से चलने की संभावना है।

समसामयिक सुझाव

- रबी फसलें: वर्तमान मौसम में किसानों को रबी फसलों की समय पर बुआई के लिए खेत की तैयारी तथा गुणवत्तापूर्ण बीज एवं अन्य आवश्यक कृषि सामग्री की पहले से व्यवस्था करने की सलाह दी जाती है। मसूर, मटर, लहसुन, धनिया, सरसों, सूरजमुखी, राजमा एवं मेथी के लिए 150-200 किंटा प्रति हेक्टेयर अच्छी तरह सड़ी गोबर की खाद डालें। मिट्टी की नमी एवं पोषक तत्वों के संरक्षण के लिए उचित जुताई एवं पाटा लगाएं।
- गन्ना: इस समय गन्ने की फसल में बंधाई (Propping) करें। 8-10 गन्नों को एक साथ इकट्ठा कर सूखी गन्ने की पत्तियों से बांधें, ताकि फसल को सहारा मिल सके। इससे आंधी-पानी में फसल के गिरने, चूहा, दीमक एवं लाल सड़न रोग के प्रकोप तथा गिरे हुए गन्ने से कल्ले निकलने का जोखिम कम होता है। साथ ही, चीनी की मात्रा बेहतर बनी रहती है तथा कटाई एवं परिवहन में सुविधा होती है। अतः अधिक उपज एवं अच्छी गुणवत्ता के लिए समय पर बंधाई करें।
- मटर: अगेती किस्मों अर्का निरमल, काशी नंदिनी, आर्कल, अलीवेज, अली जायंट, अली दिसम्बर, जवाहर मटर-3 एवं जवाहर मटर-4 की बुआई इस सप्ताह के अंत तक पूरी करें। मध्य एवं देर से तैयार होने वाली किस्मों काशी शक्ति, बोनविले, पंत उपहार, जवाहर मटर-1 एवं जवाहर मटर-2 की बुआई नवंबर के मध्य तक की जा सकती है। 80-100 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर की दर से 30x10 सेमी दूरी पर बुआई करें तथा 150-200 किंटा प्रति हेक्टेयर, 50 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस एवं 60 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर दें।
- पालक: पालक की बुआई करें। उत्तर बिहार के लिए पूसा ज्योति, ऑल ग्रीन, जोबनेर ग्रीन, पूसा हरित, एच.एस. 23, विलायती पालक, वर्जीनिया सर्वॉय एवं पंत कम्पोजिट-1 की बुआई 20-25 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर की दर से 30x5 सेमी दूरी पर करें। प्रति हेक्टेयर 125 किंटा प्रति हेक्टेयर, 80 किग्रा नाइट्रोजन, 40 किग्रा फास्फोरस एवं 40 किग्रा पोटाश दें। भूमि तैयारी के समय कम्पोस्ट, एसएसपी, एमओपी की पूरी एवं यूरिया की एक-चौथाई मात्रा दें तथा शेष यूरिया प्रत्येक कटाई के बाद 4-5 बार में दें।
- लहसुन: 300-500 किग्रा जावा प्रति हेक्टेयर की दर से 15x10 सेमी दूरी पर लहसुन की बुआई करें। यमुना सफेद-1, यमुना सफेद-2, एग्रीफाउंड (जी-41), श्वेता (सेलेक्शन-10), एग्रीफाउंड पार्वती (जी-313), यमुना सफेद-4 एवं राजेन्द्र लहसून्-1 की बुआई करें। अच्छी उपज के लिए 200-250 किंटा प्रति हेक्टेयर, 100 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस, 80 किग्रा पोटाश एवं 20-40 किग्रा सल्फर प्रति हेक्टेयर दें।
- टमाटर: टमाटर की बुआई करें। उत्तर बिहार के लिए अर्का विकास, अर्का अभेद, अर्का अलोक, अर्का अभिजीत, अर्का सौरभ, अर्का मेघाली, पूसा उपहार, पूसा रूबी, काशी शरद एवं काशी अनुपम-11 तथा संकर किस्मों में अर्का सम्राट, अर्का अपेक्षा, अर्का विशेष, पूसा दिव्या अर्का, वरदान, अर्का रक्षक एवं अर्का अनन्या की बुआई करें। सामान्य किस्मों के लिए 400-500 ग्राम तथा संकर किस्मों के लिए 150-200 ग्राम बीज प्रति हेक्टेयर प्रयोग करें। बुआई के 21-30 दिन बाद पौधों की रोपाई करें। सीमित बढ़वार वाली किस्मों में 60x45 सेमी, असीमित बढ़वार वाली किस्मों में 75x60-75 सेमी तथा संकर किस्मों में 90x60 सेमी दूरी रखें। प्रति हेक्टेयर 200-250 किंटा प्रति हेक्टेयर, 80 किग्रा नाइट्रोजन, 80 किग्रा फास्फोरस एवं 80 किग्रा पोटाश दें। नाइट्रोजन को तीन बराबर भागों में रोपाई के समय तथा 20-25 एवं 45-50 दिन बाद दें। सूक्ष्म पोषक तत्वों के लिए रोपाई के 10 दिन बाद 0.1% बोरिक अम्ल, यूरिया (20 ग्राम बोरिक अम्ल+100 ग्राम यूरिया+20 मिली टीपीएल या एक पुड़िया शैम्पू प्रति 20 लीटर पानी) का छिड़काव करें तथा पुष्पन से पहले 10 दिन के अंतराल पर कुल तीन छिड़काव करें। इसके अतिरिक्त, 0.1% जिंक सल्फेट (20 ग्राम जिंक सल्फेट+20 मिली टीपीएल या एक पुड़िया शैम्पू प्रति 20 लीटर पानी) का पुष्पन से पहले 10 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।
- बैंगन: बैंगन में फल एवं तना छेदक कीट की नियमित निगरानी करें। रोपाई के 10 दिन बाद जड़ क्षेत्र के पास कार्बोपयूरान 3 जी की 1 ग्राम मात्रा प्रति पौधा दें। कीट का प्रकोप आर्थिक क्षति स्तर से अधिक होने पर स्पिनोसैड 48 ईसी की 1 मिलीलीटर मात्रा प्रति 4 लीटर पानी या विवनालफॉस 25 ईसी की 1.5 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर मौसम साफ रहने पर छिड़काव करें। छिड़काव से पहले संक्रमित फल एवं तनों को एकत्र कर मिट्टी में दबा दें।

आज का अधिकतम तापमान: 31.9 डिग्री सेल्सियस,
जो सामान्य से 0.9 डिग्री सेल्सियस कम

आज का न्यूनतम तापमान: 23.5 डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से 0.8 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ० ए. सत्तार)

वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी